शास्त्री द्वितीय खण्ड, ~~[struck]~~ राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि० - पत्र

'पथिक' खण्ड काव्य

कवि - श्री राम नरेश त्रिपाठी

Date ——— Page ———

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर -

प्रश्न - देश के सेवक को कैसा होना चाहिए?

उत्तर :- कवि रामनरेश त्रिपाठी जी का मानना है कि देश के सेवक को कठोर कर्मी होना चाहिए। परन्तु उसका हृदय मक्खन के समान कोमल होना चाहिए। उसमें नैतिक गुणों का भण्डार होना चाहिए। उसमें पराक्रम, पौरुष, क्षमा, सज्जनता इत्यादि सद्गुणो होना चाहिए। देश को विकासशील और उन्नतशील बनाने के लिए पराक्रमी होना बहुत आवश्यक है। देश के सेवक को निष्ठा और ईमानदारी से आम-जन की सेवा करनी चाहिए।

प्रश्न :- कवि ने व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए कौन सी महत्वपूर्ण की है?

उत्तर :- कवि राम नरेश त्रिपाठी जी अपने 'पथिक' खण्डकाव्य में व्यक्तित्व को ऊपर उठाने के लिए एक बड़ी ही महत्वपूर्ण बात की माँग की है जिसका दिनानुदिन अभाव होता जा रहा है। हम यह अच्छी तरह देख रहे हैं कि आये दिन दुनिया में वास्तविकता का भाव दूर होता जा रहा है। सारी दुनिया बिना सोचे-समझे उग्रवादियों के गिरोह में शामिल होती जा रही है। गाँधीवाद साम्यवाद को खुलकर चुनौती दे चुका है। पथिक का कवि गाँधीवादी है और गाँधीवाद में ईश्वर की अलौकिक सत्ता को सिर झुकाकर स्वीकार किया गया है। त्रिपाठी जी ने भी इस पुस्तक में आस्तिकता पर जोर देते हुए बतलाया है कि परमपिता परमेश्वर की इच्छा से ही इस संसार की रचना हुई है। यह समस्त संसार इसी इसी की क्रीड़ा का रूपक है। ईश्वर की इच्छा से ही पृथ्वी का उद्भव, पालन और प्रलय होता है।

डॉ० देवचरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ० सं० महावि० सुरसेना पुर्वियाँ
27/08/20

REDMI NOTE 7 PRO
48MP DUAL CAMERA
2020/8/27 13:

शास्त्री प्रथम खण्ड, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

जयद्रथ-वध - काव्य खण्ड

कवि - मैथिलीशरण गुप्त

Date _____ Page _____

उस ओर द्रोणाचार्य थे, इस ओर अर्जुन वीर थे,
गुरु-शिष्य दोनों छोड़ते तीखे हजारों तीर थे।
हैं घोर वाद-विवाद करते दो प्रबल पण्डित यथा,
करने लगे दोनों परस्पर शस्त्र वे खण्डित तथा।
दोनों रची इस शीघ्रता से थे शरों को छोड़ते,
जाना न जाता था कि वे कब थे धनुष पर जोड़ते।
थे बाण दोनों के गगन में इस तरह फहरा रहे-
ज्यों अलिमाली में अनेकों उरग-वर लहरा रहे।।

भावार्थ

प्रस्तुत पद के माध्यम से कवि कौरवों और पाण्डवों के बीच हो रहे युद्ध का वर्णन करते हुए कहता है कि कौरव पक्ष की ओर से आचार्य द्रोणाचार्य और पांडवों की ओर से अर्जुन के बीच घमासान युद्ध चल रहा है। गुरु-शिष्य परस्पर एक दूसरे पर बड़ी तेजी के साथ हजारों तीर एक साथ छोड़ने लगे। उस समय ऐसा प्रतीत होता था मानों दो प्रकांड पण्डित परस्पर वाद-विवाद कर रहे हों। वे दोनों ही एक दूसरे के शस्त्रों को काट रहे थे।

कवि मैथिलीशरण गुप्त दोनों महान पराक्रमी वीरों के बीच हो रहे भयंकर युद्ध का वर्णन करते हैं। कवि कहता है कि दोनों महारथी गुरु द्रोणाचार्य और अर्जुन इतनी तेजी से एक दूसरे पर बाण की वर्षा कर रहे थे कि यह जानना कठिन था कि वे कब तीरों को धनुष की प्रत्यंचा पर चढ़ाते हैं। दोनों के बाण आकाश में इस तरह फहरा रहे थे जैसे तरंगों की माला के बीच में अनेकों रंग के श्रेष्ठ साँप लहरा रहे हों।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा०उ०सं० महावि० सुखसेना, पूर्णियाँ

27/08/2020

REDMI NOTE 7 PRO
48MP DUAL CAMERA
2020/8/27 13:20

उपशास्त्री, राष्ट्रभाषा हिन्दी, अ० द्वि०-पत्र

दिगंत- भाग-2- काव्य खण्ड
शीर्षक — छप्पय
कवि - नाभादास

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर-

प्रश्न — नाभादास ने छप्पय में कबीर की किन विशेषताओं का उल्लेख किया है?

उत्तर :- भक्त कवि नाभादास ने अपने 'छप्पय' कविता में संत कबीर जी की विशेषताओं का विस्तार से वर्णन किया है। कवि नाभादास जी कहते हैं कि कबीर का व्यक्तित्व अक्खड़ था। उन्होंने भक्ति विमुख तथा कथित धर्मों की खूब धज्जी उड़ाई है। उन्होंने यह भी कहा है कि कबीर जी धर्म की स्पष्ट व्याख्या करते हैं। वे योग, यज्ञ, व्रत, दान और भजन के महत्व का सटीक वर्णन किया है। उन्होंने साखी, सबद और रमैनी में हिन्दू-तुर्क के बीच एकता का बीज बोया है।

कबीर पक्षपाती नहीं हैं। वे मुँह देखी बात भी नहीं करते हैं। उन्होंने वर्णाश्रम व्यवस्था की कुरीतियों की ओर सबका ध्यान खींचा है। उन्होंने षट्दर्शन की दुर्बलताओं की पुरजोर आलोचना की है। उपर्युक्त विवेचना के आधार पर कबीर का व्यक्तित्व प्रखर स्पष्टवादी एवं क्रान्तिकारी कवि का है। इन्होंने अपने काव्य सृजन कर्म द्वारा सामाजिक बुराईयों को दूर करने और समन्वय संस्कृति की रक्षा करने में महती भूमिका निभायी है।

प्रश्न— 'मुख देखी नाहिन भनी' का क्या अर्थ है?

उत्तर:- प्रस्तुत पद्यांश में कबीर के अक्खड़ व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला गया है। कबीर ऐसे प्रखर चेतना सम्पन्न कवि हैं जिन्होंने कभी भी मुँह देखी बात नहीं की है। उन्हें सच को सच कहने में तनिक भी संकोच नहीं था। राज सत्ता हो समाज की जनता, पंडित हों या मुल्ला-मौलवी सबकी बखिया उधेड़ने में उन्होंने तनिक भी कोताही नहीं की। उन्होंने इसीलिए अपनी अक्खड़ता, स्पष्टवादिता, पक्षपात-रहित कथन द्वारा लोक मंगल के लिए अथक संघर्ष किया।

डॉ० देव चरण प्रसाद
एसो० प्रो० हिन्दी
रा० उ० सं० महावि० खुखसैना पूर्णियाँ
27/08/20